# लोक साहित्य में मानव मूल्य

15916

डॉ. बहादुर सिंह परमार

## सम्पादक परिचय

**डॉ. बहादुर सिंह परमार**

जन्म - १६ जुलाई १९६३,

जन्म स्थान - रानीपुरा, (छतरपुर)

शिक्षा - एम.ए., पी-एच.डी.

रचनाएं - 1. अमरकांत का कथा साहित्य

2. बुन्देलखण्ड की छन्दबद्ध काव्य परंपरा

सम्पादन - 1. पत्रिका बुन्देली बसंत

2. बुन्देलखण्ड की साहित्यिक धरोहर

3. छतरपुर जिले की लोक कथाएं

4. बुन्देली व्यंजन आदि

5. बुंदेलखण्ड का इतिहास (12 भागों में)

6. आर्य देव कुल का इतिहास

7. आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी सृजन
के विविध आयाम

सम्प्रति - शास.महाराजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
छतरपुर में सहा. प्राध्यापक हिन्दी

संपर्क - एमआईजी -7, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.) मो. 9425474662

# लोकसाहित्य में मानव-मूल्य

15916

**सम्पादक**

डॉ. बहादुर सिंह परमार

15916

**प्रकाशक :**

हिन्दी विभाग, शास. महाराजा स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

छतरपुर (म. प्र.)

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
  मध्यक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल के सहयोग से प्रकाशित



- © हिन्दी विभाग,
  शास. महाराजा स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)



- प्रकाशित प्रतियाँ : 200

- प्रकाशन तिथि : 26 जनवरी 2011

- मुद्रक –
  जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या0
  छतरपुर (म.प्र.)

15916

# अनुक्रमणिका


- सम्पादकीय — *डॉ. बहादुर सिंह परमार* 5
- मानव मूल्य का संरक्षण आवश्यक — *डॉ. जी.पी. राजौरे* 7
- लोकसाहित्य मानवमूल्यों का प्रतिरूप — *डॉ. पुष्पा दुबे रावत* 9
- लोकसाहित्य में व्यक्त हुयी है मानवीय करुणा — *डॉ. श्याम सुन्दर दुबे* 11
- लोकसाहित्य जिंदा रहेगा तो मनुष्यता जिंदा रहेगी — *डॉ. चौथीराम यादव* 23
- लोकसाहित्य के केन्द्र में स्त्री की पीड़ा — *मैत्रेयी पुष्पा* 29
- लोक साहित्य में मानव मूल्य — *डॉ. श्रीराम परिहार* 39
- जबसे मनुष्य का जन्म हुआ तबसे लोकसाहित्य का — *डॉ. दिनेश कुशवाह* 47
- सामान्य जन की अभिव्यक्ति का माध्यम है लोकसाहित्य — *डॉ. प्रेमलता चुटैल* 55
- हमारा लोक 'फोक' (Folk) नहीं है — *डॉ. विजयबहादुर सिंह* 64
- लोक में साहित्य, साहित्य में लोक — *वसन्त निरगुणे* 69
- जीवन मूल्य को सिरजें — *डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी* 73
- जीवन मूल्य की अवधारणा — *डॉ. राधावल्लभ शर्मा* 75
- बृज लोकोक्तियों में मानव–मूल्य — *डॉ .राजकुमार सिंह* 78 — *डॉ.विष्णु कुमार अग्रवाल*
- अवधी लोकगीतों में मानव–मूल्य — *जय शंकर तिवारी* 87
- लोकगीत स्त्री अस्मिता के परिचायक — *प्रो. अर्चना भट्ट* 93
- लोकगीतों में मानव मूल्य — डॉ. के.एल. वर्मा 'बिन्दु' 97
- बुन्देली लोक कथाओं में मानव मूल्यों की तलाश — *हरिविष्णु अवस्थी* 109
- लोकोक्तियों में जीवन–मूल्य — *डॉ. कृष्ण गोपाल मिश्र* 115
- लोकसाहित्य और मनोविज्ञान का अन्तर्सम्बन्ध — *श्रीमती संगीता सुहाने* 122

- बुन्देली कहावतों में मानव मूल्य — डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
- बुन्देली साहित्य में मानव मूल्य — डॉ. ए.एल. अंसारी
- गढ़वाली लोकगीतों में सामाजिक पीड़ा — डॉ. उषा शर्मा
- लोकगीतों में मानव जीवन मूल्य — डॉ. प्रमिला शुक्ला
  — शाश्वत शुक्ला
- बुंदेली लोकगीतों में मानव मूल्य — डॉ. प्रमोद पाठक
- मिजो लोक कथाओं में मानव मूल्य — डॉ. सुशील कुमार शर्मा
- लोक साहित्य में जीवन–मूल्यों की तलाश — डॉ. कामिनी,
- मानवीय मूल्य और लोकगीत — डॉ. श्रीमती गायत्री बाजपेयी
  — डॉ. अश्विनी कुमार बाजपेयी
- लोक गीतों में मानव मूल्य — डॉ. विनीता सिंह
- बुन्देली लोककथाओं में मानवमूल्य — डॉ. राजेन्द्र सिंह
- बुन्देली लोककथाओं में मानव मूल्य — डॉ. बृजमोहन द्विवेदी
- बुन्देली लोकगीतों में मानव–मूल्य और उसका महत्व
  — डॉ. सत्या घोष
- मानवमूल्य और बुंदेली लोककाव्य आल्हखण्ड
  — डॉ. विवेकनिधि घोष
- लोक गाथाओं में मानव मूल्य — डॉ. अशोक त्रिपाठी
  — श्रीमती पुष्पा सामवेदी
- लोक साहित्य में आधुनिक सामाजिक संरचना को निर्देशित करने की क्षमता — डॉ. लक्ष्मीचंद
- मानव मूल्यों का मानक लोक साहित्य — डॉ. सीमा दीक्षित
  — प्रो. सरोजनी अग्रवाल
- स्थान–नामों के नामकरण में लोकमूल्यों की अभिव्यक्ति
  — डॉ राकेश नारायण द्विवेदी
- फिल्म और लोक संगीत — डॉ. आनंद वर्द्धन
- लोककवि ईसुरी की चौकड़ियों में मानवमूल्य
  — डॉ. कुंजीलाल पटेल


□□□

प्रकाशक - हिन्दी विभाग
शासकीय महाराजा स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
छतरपुर (म.प्र.)